स्व. राजकुमारी जी

स्व. महाशय हंसराज जी

की

पुण्य स्मृति में पुत्र **सोमदत्त महाजन** की सप्रेम भेंट

सी–2/288, जनकपुरी, नई दिल्ली - 110 058

फोन नं. - 25551587

इस पुस्तक को निःशुल्क प्राप्त करने के
इच्छुक कृपया नीचे लिखे पते
पर सम्पर्क करें :

श्री सोमदत्त महाजन

C-2/288 जनकपुरी, नई दिल्ली - 110 058

फोन नं. 25551587 मो. 9910176664

निवेदन

''मातृवान् पितृवान् आचार्यवान् पुरुषो वेद'' यह शास्त्र वाक्य अक्षरशः सत्य है, कि वे बालक धन्य हैं जिनके माता-पिता और गुरुजन धार्मिक, सदाचारी तथा उत्तम गुण-कर्म स्वभाव के हैं। बच्चे की पहली पाठशाला माता की कोख और गोद होती है। जहां बालक को संस्कार, विचार, सदाचार, शिष्टाचार आदि की शिक्षा मिलती है। यही संस्कार व शिक्षा मनुष्य-जीवन की नींव होते हैं, इन्हीं से मनुष्य संसार-यात्रा को सुखद एवं प्रेरक बनाता है। इतिहास और जगत् में अनेक उदाहरण इसके साक्षी व प्रमाण हैं।

लोक कहावत प्रसिद्ध है– ऑवले का खाया और बुजुर्गों का सिखाया बाद में काम आता है। ''आदत पड़ी और आगे बढ़ी''। पहले घरों में बच्चों को माताएं संस्कार, विचार, व्यवहार, शिष्टाचार आदि की शिक्षा देती थीं। नानी तथा दादी की कहानियों में सारा इतिहास, भूगोल, जीवन, विद्या, विरासत तथा वसीयत की बातें आ जाती थीं। बच्चों को कथा, प्रवचन, पूजा–पाठ, धर्मग्रन्थों, महापुरुषों आदि से जोड़ती थीं जिससे व्यक्ति जीवनभर, आस्तिक एवं संभला रहता था। अच्छे कर्म करना और पवित्र जीवन जीना अपने परिवार की वसीयत समझता था। यही आदर्श· भारतीय

जीवन पद्धति थी।

आज पारिवारिक व सामाजिक जीवनमूल्य, संस्कार, आदर्श, परम्पराएं आदि बड़ी तेजी से छूट और टूट रही हैं। इसी कारण जीवन तथा जगत में बिखराव, उलझनें, समस्याएं, चिंताएं और दु:ख बढ़ रहे हैं। जीवन प्रभु का वरदान होते हुए भी उसे नरक बनाकर जिया और भोगा जा रहा है। सब कुछ होते हुए भी मनुष्य को जीना नहीं आ पा रहा है। यही समूचे मानव समाज की त्रासदी और बिडम्बना है। हमारे ऋषि-मुनि, सन्त महापुरुष और धर्म-ग्रन्थ पुकार-पुकार कर कह रहे हैं – उठो! जागो! अपने को

संभालो। बहुत गई थोड़ी बची है, उसको सुख व शान्ति-पूर्वक जी लो। प्रभु की दया और कृपा का अनुभव करो। उसकी शरण में आओ। तभी जीवन सार्थक होगा। प्रभु ने हमें देव बनाने के लिए संसार में भेजा है, हम दानव बनते जा रहे हैं। परमेश्वर के सान्निध्य में ही सच्ची सुख-शान्ति व आनन्द की प्राप्ति होगी।

श्री सोमदत्त जी महाजन ने अपने सुयोग्य माता-पिता से अच्छे विचारों, संस्कारों, आदर्शों, सेवा, परोपकार आदि की विरासत ली है और उसे बड़ी सुन्दरता से चला तथा निभा रहे हैं। श्री महाजन जी ने अपने सुयोग्य माता-पिता की

पुण्य स्मृति में और अपने तिरासीवें जन्म दिवस के उपलक्ष्य पर लघु पुस्तिका **"ओंकार स्तोत्र एवं ब्रह्म स्तोत्र"** धर्म–प्रचारार्थ प्रकाशित कर वितरित कर रहे हैं। इसके लिए वे बधाई और धन्यवाद के पात्र हैं। श्री महाजन जी के माता पिता, सद्गृहस्थ, ऋषि–भक्त, धार्मिक, परोपकारी और सेवाभावी स्वभाव के थे। अतिथि सेवा उनके स्वाभाव में था। घर पर अतिथियों के लिए सदाव्रत लगा रहता था। सादा जीवन, उच्च विचार उनके जीवन का आदर्श था। ऐसे माता–पिता की सुयोग्य सन्तान उसी विरासत तथा परम्परा का बड़ी श्रद्धा–भावना से निर्वाह कर रही है।

श्री सोमदत्त महाजन के जन्म दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई। प्रभु उन्हें ''जीवेम शरदः शतम् भूयश्च शरदः शतात्'' निरोगता प्रदान कर दीर्घायुष्य प्रदान करें। ऐसी हमारी सबकी कामना और प्रार्थना है।

विनीत

महेश विद्यालंकार

वरिष्ठ प्राध्यापक

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

फोन : 27497446

ओंकार–स्तोत्र

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद भद्रं तन्न आ सुव ॥ १ ॥

अर्थ —हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता; ऐश्वर्ययुक्त, शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर, आप कृपा करके हमारे सब दुर्गुणों और दुःखों को दूर कीजिये और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वे हमें प्राप्त कराइए।

स्तोत्र (ओंकार महिमा)

दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।
करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥

तेरा नाम उत्तम है इक ओंकार।
कि हैं जिसमें वर्णन तेरे गुण अपार॥
तू ही जगत् का प्रभु है आधार।
है कुदरत तेरी हर जो अमृत भरी॥
दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।
करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥
ऋषि तेरी भक्ति में आते हैं जो।
सदा 'ओ३म्' ही 'ओ३म्' गाते है वो॥
और इक 'ओ३म्' की रट लगाते हैं वो।
कि है 'ओ३म्' में उनकी श्रद्धा बड़ी॥
दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।

करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥
नहीं नाड़ी और नस के बन्धन में आता।
नहीं जन्म लेता नहीं दुःख उठाता॥
सकल विश्व कर्ता तू घट-घट समाता।
है शक्ति से जग भर की रचना करी॥
दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।
करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥
महादेव देवों का तू देव स्वामी।
तेरे आश्रय जड़ व चेतन तमामी॥
तू है पूर्ण ज्ञानी, नहीं कोई खामी।
है बेअन्त शक्ति व कारीगरी॥

दया कर, क्षमा कर प्रभु हर घड़ी।
करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥
है ब्रेअन्त महिमा व बेअन्त नाम।
नहीं मेरी शक्ति बखानूँ तमाम॥
परन्तु अधिक सबसे है बड़ा 'ओ३म्' नाम।
अनादि से इसको मिली बरतरी॥
दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।
करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥
हुए जग में लाखों करोड़ों सयाने।
ज्ञानी ध्यानी जिन्हें जगत् माने॥
गये हार सारे नहीं भेद जाने।

हुए देख हैरान रचना तेरी॥

दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।

करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥

तू बेअन्त सागर कठिन तेरा तरना।

असम्भव है सागर का लोटे में भरना॥

ज़िकर बहुत मुश्किल है वाणी से करना।

है बेअन्त कहने में ही बेहतरी॥

दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।

करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥

बिना तेरे दाता है किसकी यह शक्ति।

कि संसार-सागर से देवे जो मुक्ति॥

सिवा 'ओ३म्' भक्ति नहीं कोई युक्ति।
तेरी गोद केवल है आनन्द भरी॥
दया कर दया कर प्रभु हर घड़ी।
करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥

मन्त्रार्थ स्तोत्र

सकल जग को पैदा है तूने किया।
दिया हम पे सुखों का दरया बहा।
तू शुद्ध रूप परमेश्वर है सदा।
तू निर्मल, नहीं मैल तुझ में जरा।
दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।
करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी।

करो दूर दुर्गुण हमारे प्रभु।
बुरे कर्म और पाप सारे प्रभु ॥
रहें हम कुसंग से न्यारे प्रभु।
रहे नाम की तेरे मस्ती चढ़ी॥
दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।
करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥
दया की करो ईश हम पर नज़र।
करें तेरी आज्ञा में जीवन बसर॥
सदा नेक कामों पे बांधें कमर।
भरी नेकियों से हो जीवन लड़ी॥
दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।
करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥

अर्थ –प्रकाश स्वरूप और जिसने प्रकाश करने वाले सूर्य, चन्द्र आदि पदार्थों को उत्पन्न करके धारण किया है, जो उत्पन्न हुए सारे जगत् का प्रसिद्ध एक ही स्वामी चेतन-स्वरूप है, जो सारे जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, जो इस भूमि आकाश में सूर्य आदि को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा की योगाभ्यास और अति प्रेम से भक्ति किया करें।

स्तोत्र

तू प्रकाश करता नूरानी प्रभु।
चमक में नहीं कोई सानी प्रभु॥
तू ही चाँद सूरज का बानी प्रभु।
है तू ने ही बिजली में शक्ति भरी॥
दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।
करें पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥
पक्षी तेरे गुण को प्रातः ही गावें।
पशु कीट सारे ही तुझ को ध्यावें॥
खिले फूल फल तेरी महिमा दिखावें।

तेरा नाम गाती है खेती हरी॥

दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।

करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥

तू ही एक कर्त्ता है संसार का।

तू ही एक ईश्वर है नर नार का॥

तेरा सब से रिश्ता है करतार का।

तूही सब की जाने है खोटी-खरी॥

दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।

करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥

तू ही नित्य था और रहेगा हमेशा।

तू ही ब्रह्मा, विष्णु , तू ही है महेश॥

तू ही सूर्य आदि जगत् का नरेश।

तेरे आश्रय सकल सृष्टि खड़ी॥

दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।

करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥

तू शुद्ध रूप निर्मल तुझे ही ध्यावें।

तेरे प्रेम में अपना जीवन लगावें॥

केवल तेरे चरणों में सिर झुकावें।

करें प्रीत भक्तों ने जैसी करी॥

दया कर, दया कर प्रभु हर घड़ी।

करे पल में हल तू ही मुश्किल अड़ी॥

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३।

अर्थ —जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर और समाज को बल देने वाला, जिसकी विद्वान् लोग उपासना करते हैं, और जिसके प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष सुख का देने वाला है, जिसको न मानना अर्थात् भक्ति न करना मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने वाले परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् आज्ञा पालन में तत्पर रहें।

स्तोत्र

तू ही ज्ञान और बल का भण्डार स्वामी।
तू ही मुक्तिदाता निरंकार स्वामी॥
करो आत्मिक बल का संचार स्वामी।
मेरे आत्मा को पवित्र करो॥
दया सिन्धु भगवान् कृपा करो।
शरण तेरी आया सकल दुःख हरो॥
करें ध्यान तेरा ऋषि और योगीश्वर।
रटें नाम तेरा मुनि और मुनीश्वर॥
तेरे राज्य सारे हैं तू सब का ईश्वर।
प्रभु प्रेम की मुझ में शक्ति भरो॥

दया सिन्धु भगवान् कृपा करो।
शरण तेरी आया सकल दुःख हरो॥
न्यायकारी तू सच्ची सरकार है।
करे न्याय कर्मों के अनुसार है॥
करे पापी दुष्टों का संहार है।
कभी न किसी से रियायत करो॥
दया सिन्धु भगवान् कृपा करो।
शरण तेरी आया सकल दुःख हरो॥
तेरी छाया अमृत है परमात्मा।
सदा सुख है भक्ति में दिन काटना॥

है दुःखों में मरना ही न मानना।
प्रभु अपनी शक्ति का अमृत भरो॥
दया सिन्धु भगवान् कृपा करो।
शरण तेरी आया सकल दुःख हरो॥
सकल ज्ञानदाता जो रक्षपाल हो।
तेरी आज्ञा का सदा ख्याल हो॥
तेरा प्रेम ही मन में सब काल हो।
जपूं नाम तेरा मैं पापों को धो॥
दया सिन्धु भगवान् कृपा करो।
शरण तेरी आया सकल दुःख हरो॥

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥

अर्थ— जो प्राण वाले और अप्राणी रूप जगत् का अपना अनन्त महिमा से एक विराजमान राजा है, जो इन मनुष्य आदि प्राणियों के शरीरों की रचना करता है, हम उस सुखस्वरूप, सकल ऐश्वर्य के देने वाले परमात्मा के लिये अपनी सकल उत्तम सामग्री से विशेष भक्ति करें।

स्तोत्र

तू ही जड़ चेतन का सरताज है।
मनुष्य पशु पक्षी का अधिराज है॥
अजब महिमा तेरी ऐ महाराज है।
कि भिन्न-भिन्न शरीरों की रचना करो॥
दया सिन्धु भगवान् कृपा करो।
शरण तेरी आया सकल दुःख हरो॥
सकल ज्ञानदाता जो रक्षपाल हो।
तेरी आज्ञा सदा दयाल हो॥
तेरा प्रेम ही मन में सब काल हो।
जपूँ नाम तेरा मैं पापों का धो॥
दया सिन्धु भगवान् दया करो।
शरण तेरी आया सकल दुःख हरो॥

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ५ ॥

अर्थ – जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य और भूमि आदि को धारण किया है, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया है और जिस ईश्वर ने दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश आदि सब लोक-लोकान्तरों का निर्माण करता है, हम लोग उस सुखस्वरूप, कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिये सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

स्तोत्र

तेरी जोत से जग में प्रकाश है।
तेरे वश में पृथ्वी और आकाश है॥
तू पाले, बनावे, करे नाश है।
तू ही विश्व भर को रहा धार जी॥
तू ही तू, तू ही तू, ऐ करतार जी।
कि दोनों का बेड़ा करो पार जी॥
तू ही लोक लोकान्तरों को बनावे।
और अपनी ही सत्ता से सबको फिरावे॥
कि आकाश में मानों पक्षी उड़ावे।
अजब विश्वकर्मा तू दातार जी॥

तू ही तू, तू ही तू, ऐ दातार जी।
कि दीनों का बेड़ा करो पार जी॥
सकल ज्ञानदाता जो रक्षपाल हो।
तेरी आज्ञा का सदा ख्याल हो॥
जपूँ नाम तेरा मैं सौ बार जी।
तू ही तू, तू ही तू, करतार जी॥
कि दीनों का बेड़ा करो पार जी।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ६ ॥

अर्थ —हे प्रजा के स्वामी परमात्मा ! आपके सिवा दूसरा कोई भी जड़ और चेतन को बनाने वाला नहीं है। आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग आप का आश्रय लेवें, और इच्छा करें, उस-उस कामना को सिद्ध करो, जिससे हम लोग धन, ऐश्वर्य के स्वामी हों।

स्तोत्र

हे प्रजा के स्वामी सर्वशक्तिमान्।
हुआ है न होगा कोई तुझ समान॥
लासानी पिता हो सकल-गुण-निधान।
न महिमा की पावे कोई पार जी॥

तू ही तू, तू ही तू, ऐ करतार जी।
कि दीनों का बेड़ा करो पार जी॥
यह दो हमको शक्ति हे परमात्मा।
कि हों भक्त तेरे सभी आत्मा॥
बनें नेक कर्मों से धर्मात्मा।
जगत् में फैलाएं सदाचार जी॥
तू ही तू, तू ही तू, ऐ करतार जी।
कि दीनों का बेड़ा करो पार जी॥
दो कर जोड़ आते हैं तेरे द्वारे।
सभी काम पूरे हों भगवान् हमारे॥

करो बल से और धन से पूर्ण प्यारे।
कि आधीन होवें न लाचार जी॥
तू ही तू, तू ही तू, ऐ करतार जी।
कि दीनों का बेड़ा करो पार जी॥

**ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥ ७ ॥**

अर्थ —हे मनुष्यों ! वह परमात्मा भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् को पैदा करने वाला, सब कामनाओं को पूर्ण करने वाला, सारे जगत के नाम, स्थान और जन्मों को जानता है । जिस सांसारिक सुख, दुःख से रहित परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होकर विद्वान् लोग

अपनी इच्छा से विचरते हैं, वही परमात्मा हमारा गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है । सब लोग मिलकर सदा उसकी भक्ति किया करें।

स्तोत्र

तू ही तात मेरा तू ही भ्रात है।
तू ही बन्धु भगवन् तू ही मात है॥
भरोसा मेरे मन में दिन रात है।
कि तू इस जगत् का करनहार जी॥
तू ही तू,तू ही तू है करतार जी।
कि दीनों का बेड़ा करो पार जी॥

है विद्वान् ऋषियों ने तुझ को जपा।
तुझे मुक्ति है दाता निश्चय किया॥
हो जीवन मुक्त जग में यश ले लिया।
कि तू ही हुआ उनका आधार जी॥
तू ही तू,तू ही तू ऐ करतार जी।
कि दीनों का बेड़ा करो पार जी॥
तू आदि गुरु ज्ञान दाता है तू।
प्रथम वेद विद्या फैलाता है तू॥
सच्चा वेद मार्ग दिखाता है तू।
तेरे दर पे मेरा नमस्कार जी॥
तू ही तू,तू ही तू ऐ करतार जी।
कि दीनों का बेड़ा करो पार जी॥

हो प्रीति मुझे इस तेरे नाम से।
मैं भागूं हमेशा बुरे काम से॥
करूँ तेरी भक्ति मैं निष्काम।
मिले मोक्ष मार्ग हे दातार जी॥
तू ही तू, तू ही तू, ऐ करतार जी।
कि दीनों का बेड़ा करो पार जी॥

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥ ८ ॥

अर्थ—हे सब प्रकाश ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करने वाले, सकल सुखदाता परमेश्वर, आप सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं। कृपा करके हम लोगों को राज्य आदि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे धर्मयुक्त लोगों

के मार्ग से सम्पूर्ण ज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराएं। हमसे कुटिलता भरे पापरूप कर्म दूर कीजिए। इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार से प्रशंसा और स्तुति सदा किया करें और हमेशा आनन्द में रहें।

स्तोत्र

जगे जोत तेरी हे प्रकाश वाले।
तू सुखरूप स्वामी जगत् के उजाले॥
तू दे हम को विद्या ज्ञानी बना ले।
मिटा दो मेरे मन का अन्धकार जी॥
तू ही तू, तू ही तू, ऐ करतार जी।
कि दिनों का बेड़ा करो पार जी॥

वह मार्ग जो भक्तों को तूने दिखाया।
जो वेदों को पढ़ करके ऋषियों ने पाया॥
है शुभ कर्म में अपना जीवन लगाया।
उसी धर्म का दो मुझे प्यार जी॥
तू ही तू, तू ही तू, ऐ करतार जी।
कि दीनों का बेड़ा करो पार जी॥
कुटिल पाप कर्मों से प्रभु जी हटाओ।
मुझे पापियों से हमेशा बचाओ॥
केवल अपनी पूजा में भगवान् लगाओ।
करूँ विनती तुझसे मैं सौ बार जी॥
तू ही तू, तू ही तू, ऐ करतार जी।
कि दीनों का बेड़ा करो पार जी॥

ओ३म् सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥ ९॥

सब का भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान्।
सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण॥
सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें, बल पाये चढ़ें नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहें, ऋजुपन्थ गहें, परिवार कहें वसुधा भर को॥
ध्रुव धर्म धरें, पर दुःख हरे, तन त्याग तरें भवसागर को।
दिन फेर पिता, वर दे सविता, हम आर्य करें जगती भर को॥

प्रभु वन्दना

सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सब की भगवान् पूरी हाये॥ १॥
विद्या बुद्धि तेज बल, सबके भीतर होय।

विद्या बुद्धि तेज बल, सबके भीतर होय।
दूध पूत धन धान्य से, वंचित रहे न कोय ॥ २ ॥
आप की भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग द्वेष से चित्त मेरा कोसों भागे दूर ॥ ३ ॥
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश ॥ ४ ॥
पाप से हमें बचाइये, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय कर, सबको करो निहाल ॥ ५ ॥
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
हृदय में धैर्य वीरता, सबको दो करतार ॥ ६ ॥
नारायण तुम आप हो, पाप विमोचनहार।
क्षमा करो अपराध सब कर दो भव से पार ॥ ७ ॥
हाथ जोड़, विनती करूँ, सुनिए कृपा निधान।
साधु संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान ॥ ८ ॥

।। ओ३म् ।।

ब्रह्म स्तोत्र

वैदिक सन्ध्या तथा प्रातःकाल के पढ़ने वाले मन्त्रों का कविता में अर्थ

जिन सज्जनों अथवा देवियों को संस्कृत पढ़ने में कठिनाई होती है वे केवल हिन्दी कविताओं का प्रातः सायं सस्वर गायन करके इस पुस्तक से आध्यात्मिक लाभ उठा सकते हैं।

प्रातः काल के व्रत

ओ३म् प्रातः रत्नं प्रातरित्वा दधाति तं चिकित्वान प्रतिगृह्यानिधत्ते। तेन प्रजां वर्धयमान आयूराय स्पोषेण सचते सुवीरः ।१।

ऋृ-१-१२५-१

व्रतपते बल के भण्डारा।

प्रातः काल मैं पुत्र तुम्हारा।१।

तव चरणन में चित्त देता हूं।

सुन्दर समय पर व्रत लेता हूँ ।२।

दिन भर मैं न पाप करूँगा।

सायं प्रातः जाप करूँगा ।३।

सब अंगों को वश में करके।

शुभ मार्ग में सदा विचर के ।४।

कर्म मैं वेद अनुसार करूँगा।

शुभ कर्मों से प्यार करूँगा ।५।

धर्म पूर्वक करूँगा गुजारा।

केवल तेरा रहे सहारा।६।

पर उपकार में रहे जीवन।

धन बल तेरे कर दूँ अर्पण।७।

जब भी मन में पाप समावे।

जब भी बुद्धि कुमार्ग जावे।८।

तब ही दया अपार दिखाओ।

पाप कर्म से प्रभु बचाओ।६।

प्रातः काल तुझे नित ध्यावें।

आलस्य निद्रा दूर भगावें।१०।

ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम।

ऋ ७-४१-१

प्रकाश वाले ईश्वर, दातार हो जगदीश्वर।
हे भक्त के परमेश्वर, प्रीतम तुम्हें प्रणाम हो।१।
प्रातः समय सुहावना, अमृत भरा दिल भावना।
है मन भरी शुभ कामना, प्रीतम तुम्हें प्रणाम हो।२।
यह चांद सूर्य तारागण, उत्पन्न किए नदियाँ व वन।
हर जर्रे में तेरी फबन, प्रीतम तुम्हें प्रणाम हो।३।
हे प्राण सारे जगत के, और पूज्य हो हर वक्त के।
हे परम प्यारे भक्त के, प्रीतम तुम्हें प्रणाम हो।४।
ज्ञान के प्रकाश हो, निज भक्त का विश्वास हो।

और पापियों का नाश हो, प्रीतम तुम्हें प्रणाम हो।५।
हम पाप से डरते रहें, भक्ति तेरी करते रहें।
और वेद को पढ़ते रहें, प्रीतम तुम्हें प्रणाम हो।६।

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता। आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चित् राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ।३। ऋ० ७-४१-२

जब कि समय प्रभात हो,
घड़ी चार रहती रात हो,
हर मन में तेरी बात हो,
ऐसी प्रभो कृपा करो।१।

सत्ता को तेरी जानें हम,

बल तेज को पहचानें हम।

इक तेरी पूजा मानें हम,

ऐसी प्रभो कृपा करो।२।

ऐ ईश जग के कर्ता हो,

सब प्राणियों के भर्ता हो।

और दुष्टों के संहर्ता हो,

ऐसी प्रभो कृपा करो।३।

प्रकाश के भण्डार हो।

और पूज्य हर प्रकार हो।

भक्ति तेरी दरकार हो,

ऐसी प्रभु कृपा करो।४।

हो सबके मन की जानते,

योगी तुम्हें पहिचानते।

किसी और को नहीं मानते,

ऐसी प्रभु कृपा करो।५।

ओ३म् भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम।४। ऋ० ७-४१-३

धन धाम के दातार जी, हर आत्मा के तार जी।
बल बुद्धि देने हार जी, बलिहार तेरे नाम के।१।
हो सत्य के भण्डार जी, हो सत्य से ही प्यार जी।
हो वेद का प्रचार जी, बलिहार तेरे नाम के।२।
हों देशवासी वीर जी, विद्वान और गम्भीर जी।
निज धर्म के हो धीर जी, बलिहार तेरे नाम के।३।
हम क्रोधी और कामी न हों, पर स्त्रीगामी न हों।
कभी पाप के हामी न हों, बलिहार तेरे नाम के।४।
सुध-बुध हमारी लीजिये, रक्षा हमारी कीजिये।
गौ दूध माखन दीजिये, बलिहार तेरे नाम के।५।

ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्। उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम।५। ऋ० ७-४१-४

भगवान गुण निधान जी, कोई है न तुझ समान जी।
महिमा अनन्त महान जी, बे अन्त हो बे अन्त हो।१।
कृपा की वर्षा हो प्रभु, बल तेज हमको दो प्रभु।
दो मैल मन की धो प्रभु, बे अन्त हो बे अन्त हो।२।
होवें सभी पुरुषार्थी, हों ज्ञानी और परमार्थी।
विद्या के ही विद्यार्थी, बे अन्त हो बे अन्त हो।३।

सत्पुरुषों के सत्संग में, मन रंग भक्ति रंग में।
चित्त धोवें प्रेम की गंग में, वे अन्त हो बे अन्त हो।४।
ऋषियों की बुद्धि दीजिए, बुद्धि सुबुद्धि कीजिये।
अपनी शरण में लीजिये, वे अन्त हो बे अन्त हो।५।

ओ३म् भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह ।६। ऋ॰ ७-४१-५

ऐ जगत के जगदीश्वर, गावें तुझे ऋषीश्वर।
योगी मुनि मुनीश्वर, महिमा है अपरम्पार जी।१।

आधार हो संसार के और देवता नर नार के।
फल दाता कर्मानुसार के, महिमा है अपरम्पार जी।२।
परदा उठे अज्ञान का, और संग हो विद्वान् का।
प्रकाश वैदिक ज्ञान का, महिमा है अपरम्पार जी।३।
हम क्रोधी न अभिमानी हों, सत्यधारी, सत्यमानी हों।
सत्य-वक्ता हों, दानी हों, महिमा है अपरम्पार जी।४।
निज दास की सुनो विनती दो प्रीति अपनी भक्ति की।
होवे सहायक मुक्ति की, महिमा है अपरम्पार जी।५।

ब्रह्मस्तोत्र अर्थात् वैदिक सन्ध्या

(जपजी की तर्ज पर, कविता में अर्थ)

अथः सन्ध्या विधि

द्विज मात्र के लिये जैसे कि (अन्नादि) आहार नित्य प्रति आवश्यक है, वैसे ही दो काल (सायं, प्रातः) सन्ध्या उपासना और गायत्री का जाप अत्यन्त करणीय है। महाराज मनु जी का कथन है कि जो दोनों काल सन्ध्या नहीं करता वह शूद्र है। इसलिये प्रत्येक ब्राह्मण,

क्षत्रिय वैश्य को नीचे लिखी पूर्ण विधि के अनुसार दोनों समय सन्ध्या करनी चाहिये।

विधि : प्रातः काल चार घड़ी रात रहे उठ कर नदी की ओर जा, जंगल में मल त्याग, नदी में अथवा किसी सरोवर के स्वच्छ जल में स्नान कर एकान्त में बैठ मन को एकाग्र करना चाहिये और संसार के झगड़ों को उस समय के लिये भुला देना चाहिये। जब मन स्थिर हो जाये तो ईश्वर स्तुति के एक दो भजन गाने के बाद गायत्री

मन्त्र पढ़कर चोटी के बिखरे बाल बाँध देने चाहिये। तत्पश्चात् 'ओं शन्नो देवी' से ३ आचमन करने चाहिये फिर इन्द्रियस्पर्श और मार्जन-मंत्र से सब अंगों पर जल छिड़कने के पीछे प्रत्येक मंत्र का अर्थ विचार कर सन्ध्या समाप्त करनी चाहिये और गायत्री का जाप करते हुए सूर्य के दर्शन करें और इसी प्रकार सायंकाल को तारागण के दर्शनों के साथ संध्या समाप्त करनी चाहिये।

नोट : गृहस्थ को चाहिये कि शौच, स्नान प्राणायाम

आदि नदी के तट पर करे और सन्ध्योपासना घर आकर परिवार सहित मिलकर करें।

गायत्री जाप के लिए गायत्री गीता परम पुनीत पुस्तक का पाठ करें।

।।ओ३म्।।

वैदिक सन्ध्या

(गायत्री-मंत्र)

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

यजु ३६/३, ऋगु ३/६२/१०, साम उ० प्र० ६१३

मनुजी ने लिखा है कि तीन प्राणायाम के पश्चात् शुद्ध होकर गायत्री का जप करना चाहिए। पुनः सन्ध्या करनी चाहिये।

अथ आचमन मन्त्रः

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्त्रवन्तु नः।। यजुर्वेद अ॰ ३६ मं॰ १२

ओंकार प्रभु तेरा नाम, गुण गावे संसार तमाम।
तेरी महिमा गावें वेद, तेरे जपे न आवे खेद।
सत् चित् आनन्द स्वरूप, निराकार निर्भय अनूप।
जग का स्वामी पालनहारा, जग प्रकाशक व्यापक सारा।
मन माँगे सुख भोग तमामी, पूर्ण आनन्द देओ स्वामी।

वर्षा सुख की करो महेश, तीन ताप हों दूर क्लेश।

ओ३म् वाक् वाक्। ओ३म् प्राण. प्राणः।

ओ३म् चक्षुः चक्षुः। ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम्।

ओ३म् नाभिः। ओ३म् हृदयम्। ओं कंठः।

ओ३म् शिरः। ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम्।

ओ३म् करतल करपृष्ठे।

दीन दयाल दया के सागर, दीजे हमको बुद्धि उजागर।

ज्ञान-कर्म दश इन्द्रिय मेरे, कभी न आवें पाप के नेरे।

रस भरी शुभ बोलें वाणी, प्राण पवित्र करो हे स्वामी।

दो आँखें दो कान पिताजी, देखें सुने पवित्र कथा ही।
नाभि हृदय कंठ भुजायें, हाथों से न पाप कमायें।
यश बल जितना मिले प्रभुजी, शुभकर्मों में लगे सदाही।

अथ मार्जन मन्त्राः

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये। ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः। ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

प्राणों से हे प्यारे भगवन,
शिर को करो पवित्र निशदिन।
दुःख विनाशक दीन-दयाला,
आँखों में रहे ज्ञान उजाला।

सर्व-व्यापक सुख के दाता,
करो पवित्र कष्ठ विधाता।
महा प्रभु तुम ईश हमारे,
हृदय करो पवित्र हमारे।
करो पालना जगत बनाकर,
नाभि मेरी करो पवित्र।
दण्ड-दाता प्रभु ज्ञान भण्डारा,
रहे पवित्र मार्ग हमारा।
सत्य स्वरुप अविनाशी ईश्वर,
पुनः पवित्र करो मेरा शिर।
महा प्रभु सर्वत्र व्यापक,
करो पवित्र बुद्धि आदिक।

अथ प्राणायाम मन्त्राः

ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः। ओ३म् महः। ओ३म् जनः। ओ३म् तपः। ओ३म् सत्यम्।

तैत्ति॰ आ॰ प्रपा॰ 10–27

प्राण स्वरूप प्राणों से प्यारे,

दुःख दूर सब करने हारे।

सर्व-व्यापक आनन्द दाता,

सब से बड़े जगत पिता माता।

दुष्टों को दण्ड देने वाले,

सब की ही सुध लेने वाले।

सत्य स्वरूप दया सागर हो,

अविनाशी तुम अजर अमर हो।

अथाघमर्षण मन्त्राः

(ईश्वर–रचना चिन्तनम्)

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽर्णवः॥1॥ ऋ॰ 10/190/1

अपनी सत्ता से परमेश्वर,

प्रकृति से जगत् बनाकर।

ज्ञान दिया जग गुरु कहलाया,

वेदों का प्रकाश फैलाया।

जीव वृक्ष पृथ्वी के अन्दर,

सागर नदियाँ रचे समुन्दर।

जिस सत्ता से जग उपजावे,

उसी से जग में प्रलय ले आवे।

ओ३म् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।2।

ऋ॰ 10—190—2

जगत में वश में रखने वाले,

परमेश्वर के खेल निराले।

रात बनाई दिवस बनाया,

काल को हिस्से कर दिखलाया।

ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ।3।

ऋग 10–190–3

चन्द्र सूर्य भूमण्डल तारे, लोक लोकान्तर रच के सारे।
नियम रखे इन में भी ऐसे, थे पहले कल्पों में जैसे।

मनसा–परिक्रमा मन्त्राः

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥1॥

ज्ञानमय बन्धन से न्यारा,
सम्मुख रहता अपरम्पारा।
महाराज अधिराज स्वतन्त्र,
रक्षा हमारी करे निरन्तर।
सूरज की किरणों के द्वारा,
पृथ्वी का जीवन आधारा।

दयामय दातार ध्यावें,

बार-बार तेरे गुण गावें।

जो अज्ञान से देवें क्लेश,

या हम जिनसे करें द्वेष।

हे न्यायकारी ईश हमारे,

सौपें उसको वश में तुम्हारे।

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥2॥

हे भगवन्! दक्षिण भी सारा,
महाराज है राज तुम्हारा।
सांप आदि जीवों से ईश्वर,
इन से रक्षा करो निरन्तर।
ऋषि मुनि विद्वानों द्वारा,
देते हम को ज्ञान अपारा।
दयामय दातार ध्यावें,
बार बार तेरे गुण गावें।
जो अज्ञान से देवे क्लेश,
या हम जिन से करें द्वेष।

हे न्यायकारी ईश हमारे,

सौंपें उसको वश में तुम्हारे।

ओ३म् **प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥३॥**

हे सुन्दर! अनूप स्वरूपम्,

महाराज तेरा ही पश्चिम।

बल-धारी जो पशु भयंकर,

इनसे रक्षा करो निरन्तर।

अन्नदाता इस अन्न के द्वारा,

रक्षा पाता प्राण हमारा।

दयामय दातार ध्यावें,

बार बार तेरे गुण गावें।

जो अज्ञान से देवें क्लेश,

या हम जिन से करें द्वेष।

हे न्यायकारी ईश हमारे,

सौपें उसको वश में तुम्हारे।

ओ३म् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।4।

उत्तर में भी रहे विराज,

परम धन्य तुम ही महाराज।

बिजली द्वारा देह के अन्दर,

गति खून की रहे निरन्तर।

कैसी अद्भुत कला चलाई,

महिमा जिसकी वरणी न जाई।

दयामय दातार ध्यावें,

बार बार तेरे गुण गावें।

जो अज्ञान से देवें क्लेश,

या हम जिन से करें द्वेष।

हे न्यायकारी ईश हमारे,

सौंपें उसको वश में तुम्हारे।

ओ३म् ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमो॑धिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो॑स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥5॥

निचले लोक और निचली दिशायें,

तू स्वामी तेरा यश गायें।

देवी देव सब तुझे ध्यावें,

तेरा ही उपकार मनावें।

हरे साग फल फूल उगाये,

जिस से प्राणी रक्षा पाएं।

दयामय दातार ध्यावें,

बार-बार तेरे गुण गावें।

जो अज्ञान से देवें क्लेश,

या हम जिन से करें द्वेष।

हे न्यायकारी ईश हमारे,

सौंपें उस को वश में तुम्हारे।

ओ३म् ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।6।

अथर्व० काँ० 3 सू० 27 मं० 1 से 6।

ऊंची दिशा का है तू स्वामी,
सकल जगत् का अन्तर्यामी।
रंक भिखारी राजा राना,
है सभी का तू ही तराना।
खेत पकें जब मेह बरसावें,
जिससे प्राणी रक्षा पावें।
दयामय दातार ध्यावें,
बार बार तेरे गुण गावें।

जो अज्ञान से देवे क्लेश,

या हम जिनसे करें द्वेष,

हे न्यायकारी ईश हमारे,

सौंपें उसको वश में तुम्हारे।

उपस्थान मन्त्राः।

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।

देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

यजुर्वेद 35 24

अन्धकार से दूर दयामय,

ज्ञानवान भण्डार सुखों के।

प्रलय के पीछे भी बाकी,

नाश रहित हो कान गुणों के।

आत्मदेव हो सकल जगत् के,

आनन्द दाता परम भगत के।

जन्म जगत् को देने वाले,

ज्योतिर्मय हमको अपना ले।

ओ३म् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्।2।

यजु॰ 33-31

ज्योतिर्मय धन धान्य के दाता,
तेज तेरा जग को चमकाता।
आदि सृष्टि में यह ही चार,
वेद दिये हम को दातार।
महिमा को दरशाने वाले,
सत्य ज्ञान बतलाने वाले।
सकल वस्तु महिमा दरशावें,
ज्यों झण्डिया मार्ग दिखलावें।

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावापृथ्वी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।3।

य॰ अ॰ 7 मन्त्र 42

यद्यपि जग की सकल सामग्री,

महिमा है तेरी दरशाती।

तो भी हो अनन्त रंगीले,

बलदाता अद्भुत चमकीले।

चाँद सूर्य चमकाने वाले,

चराचर जगत बनाने वाले।

मन वाणी गुण कर्म स्वभाओ,

हे ईश्वर बलवान बनाओ।

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतम्। जीवेम शरदः शतम्। शृणुयाम शरदः शतम्। प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।4।

य॰ अ॰ 36 मं॰ 24।

हो आँखों की आँख पिता जी,

देवों के महादेव अनादि।

महिमा देखें सौ वर्ष तक,

सुनें कीर्तन सौ वर्ष तक।

सुख से जीवें सौ वर्ष तक,

ध्यावें ईश्वर सौ वर्ष तक।

प्रेम लीन हों सौ वर्ष तक,

स्वाधीन हों सौ वर्ष तक।

सौ वर्षों से ज्यादा जीवें,

ओ३म् नाम रस अमृत पीवे।

गायत्री मंत्रः

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

यजु॰ 36/3

ओंकार प्रभु तेरा नाम,

गुण गावे संसार तमाम।

प्राण स्वरुप प्राणों से प्यारा,

दूर दुःखों को करने हारा।

सुख स्वरुप सुखों का दाता,

अन्त न कोई तुम्हारा पाता।

सारे जग को पैदा करता,

सब से उत्तम पाप का हर्ता।

हे ईश्वर ! हम तुझे ध्यावें,

पाप कर्म के पास न जावें।

बुद्धि करो हमारी उज्ज्वल,

जीवन होवे हमारा निर्मल।

||समर्पणम्||

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां **सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः** ||

हे परमेश्वर दयानिधे ! आपकी कृपा से जपोपासनादि कर्मों को करके हम धर्म अर्थ काम और मोक्ष को शीध्र प्राप्त होवें।

दयानिधे ! हे ईश्वर प्यारे, जितने हैं शुभ कर्म हमारे।
हों अर्पण वह कर्म तमामी, तेरे शुभ चरणों में स्वामी।
होवे प्राप्त भक्ति तेरी, सत्य धर्म में प्रीत घनेरी।
धर्म अर्थ और काम हमारे, मोक्ष आदि पदार्थ चारे।
इनकी सिद्धि प्राप्त होवे, जन्म मरण के कष्ट को खोवे।

नमस्कार मन्त्रः

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च। नमः शंकराय च मयस्कराय च। नमः शिवाय च शिवतराय च॥

यजु॰ 16—41।

नमस्कार कल्याण स्वरूपम्, नमस्कार हो प्रभु अनूपम्।

नमस्कार सुखों के दाता, नमस्कार हो ईश विधाता।

नमस्कार हो शान्ति भण्डारा, नमस्कार सौ बार हमारा।

ओ३म् जाप की महिमा

प्यारे ओ३म् के भजन में, मत तू देर लगाय।
क्या जाने इस देह में, साँस रहे कि जाय।।१।।
सदा ओ३म् का जाप कर, व्यर्थ साँस मत खोय।
न जाने यह साँस ही, अन्त समय का होय।।२।।
नित्य ओ३म् का जाप कर, कहाँ करें नरक्रूर।
स्तुति निन्दा जगत की, दो उनके सिर धूर।।३।।
ओ३म् जपत कुष्ठी भला, झर-झर परे ही चाम।
कंचन तन किस काम का, जपे नहीं ओ३म् नाम।।४।।

दुःख नाशक आनन्द करन, सदा ओ३म् का नाम।
निश दिन जो प्राणी जपे, सफल होए तिहि काम।।५।।
सब नामों से है बड़ा, ओ३म् ही का प्रिय नाम।
जिसे जपे से मिलत है, परम मुक्ति का धाम ।।६।।
प्यारे ओ३म् से प्यार कर छोड़ झूठ सब काम।
और प्रिय सब नाश है, ओ३म् सत्य है नाम ।।७।।
हमारे सतगुरु यों कहा, ओ३म् प्रभु का नाम।
निश दिन ताको सिमरियें, दुःख नाशक सुख धाम।।८।।
साधु मण्डली बैठकर, ओ३म् का कीजिए जाप।
इसकी दया से मिटत है, मन के सब ही पाप ।।६।।

जिस घर ओ३म न सिमरिए, अमृत प्राणाधार ।
सो मसान घर भूमि का, सदा उडे तिहि छार ।।१०।।
सब वेदन का सार यही, सब धर्मन के बीच ।
जो नर ओ३म् न सिमरते, वे नीचन के नीच ।।११।।
हाथी घोड़े धन घना, चन्द्रमुखी बहु नार ।
ओ३म् एक के भजन बिन, दुःख पावे संसार ।।१२।।
मन ही मन में जाप कर, वृत्ति अर्थ में होय ।
दर्शन ही प्रिय ओ३म् का, जीवन पावन होय ।।१३।।
दर्शन हो प्रिय ओ३म् का, सो घर मंगल रूप।
ओ३म् नाम के जाप बिन, नीच सेठ और भूप ।।१४।।

सबसे प्यारा ओ३म् और स्वार्थ के प्यार।
स्वार्थ जब पूर्ण हुआ, कौन किसी का यार।।१५।।
मुख से कहते ओ३म् को, सुख उपजत चहुँ ओर।
शान्ति पावे आत्मा, चित्त न होय कठोर।।१६।।
प्यारे ओ३म् का जाप कर, अवसर बीता जात।
फिर पछताए क्या बने, शाक्ति रहे न गात।।१७।।
मरण समय में जीव जो, ओ३म् धरत है ध्यान।
वह पावे है परम पद, यह निश्चय कर जान।।१८।।
मन को जो ठहराय के, ओ३म् जपे जो कोय।
सायं अरु प्रातः समय, दुःख नहीं पावे सोय।।१६।।

जप तप संयम हैं घने, नहीं कुछ पारावार।
ओ३म् नाम सिमरण करे, वह सुख पाय अपार।।२०।।
ओ३म् का अर्थ विचारिया, रक्षा करने हार।
उत्पत्ति पालन करत है, वह सब का करतार ।।२१।।
यही ओ३म् का अर्थ है, जिस मन करे निवास।
उसके अघ सब घास में, ज्ञान अग्नि से नास ।।२२।।
ओ३म् नाम है गुप्त धन, विरला पाये सन्त।
करे न कोई कामना, दुःख का होवे अन्त ।।२३।।
जपे न जब तक ओ३म् को जो सन्तन का मीत।
वे दिन गिनती में नहीं, गये वृथा जो बीत. ।।२४।।

मूर्ख ओ३म् से नेह कर, छोड़ सकल जंजाल।
ओ३म् ही केवल सार है, जग का ओं प्रतिपाल।।२५।।
मधुरन में सबसे मधुर, शुभ में अति शुभ धाम।
पावन में पावन परम, एक ओ३म् का नाम ।।२६।।
ब्रह्मा से तृण तक सकल, जन माया के काम।
सत्य सत्य पुनि सत्य है, एक ओ३म् का नाम।।२७।।
श्वासन को विश्वास नहीं, कब हो जाय विराम।
अब से ही कीर्तन करो, एक ओ३म् का नाम।।२८।।
अहो कष्ट अति कष्ट हो, यही परम दुःख ठाम।
लिया रत्न से कॉच को, छोड़ ओ३म् का नाम।।२६।।

गावो गावो नित्य प्रति, मित्र ओ३म् का नाम।
सुना श्रवण से नित्य हो, पूर्ण हों सब काम।।३०।।
जग के सुख दुःख हैं, रोग शोक के धाम।
चिदानन्दमय शुद्ध धन, एक ओ३म् का नाम।।३१।।
कामी को जिमि नार प्रिय, लोभी को जिमि दाम।
तस हो मोहे ओ३म् की, धुन हो आठों याम।।३२।।
उनके सब दिन सुदिन हैं, करें ओ३म् का जाप।
ओ३म् नाम बिसराय के, सब पायें त्रय ताप।।३३।।
ओ३म् अक्षर के कहत ही, निकसित पाप पहाड़।
फिर आवन पावत नहीं, देत 'मकार' किवाड।।३४।।

रे मन देर न कीजिए, जपों ओ३म् का नाम।
जाप प्रताप सों मिटत हैं, मन के सब दुष्काम।।३५।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।

पितु मात तू ही गुरु तात तू ही,
मित भ्रात तू ही धन धान्य हमारो।
ईश तू ही जगदीश तू ही,
मम शीश तू ही प्रभु राखन हारो।
राव तू ही उमराव तू ही,
सत्भाव तू ही मम नयन को तारो।
सार तू ही करतार तू ही,
घर बार तू ही परिवार हमारो।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

सब वेद पढें सुविचार बढ़ें,
बल पाये चढें नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहें ऋजु पन्थ गहें,
परिवार कहें वसुधा भर को।
ध्रुव धर्म धरें पर दुःख हरें,
तन त्याग तरें भवसागर को।
दिन फेर पिता वर दे सविता,
हम आर्य करें जगती भर को।

भजन

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन्! पूरी होय।।
विद्या, बुद्धि, तेज, बल सबके भीतर होय।
दूध, पूत, धन, धान्य से, वंचित रहे न कोय।।
आप की भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा, भागे कोसों दूर।।
मिले भरोसा आप का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।।

हमें बचाओ पाप से, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय कर, हम को करो निहाल।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
हृदय में धैर्य वीरता, सबको दो करतार।।
नारायण तुम आप हो, पाप विमोचन हार।
क्षमा करो अपराध सब, कर दो भव से पार।।
हाथ जोड़ विनती करू, सुनिये! कृपा निधान।
साध संगत सुख दीजिए, दया नम्रता दान।।

आरती

कृपा करो हे नाथ

(श्री रणवीर जी की लिखी हुई यह आरती प्रतिदिन पूजा पाठ और हवन के बाद गाई जा सकती है।)

विनय सुनो हे नाथ जी दीनबन्धु भगवान।
जो आये तुम्हरी शरण, उसका हो कल्याण।।

तुम हो अभय दान के दाता, तुम हो भवसागर के त्राता।
तुम हो सतत सुख शुभ रूपा, रवि-शशि सबके तुम भूपा।।
रात दिना ये सब कुछ तुम से, गर्मी सर्दी वर्षा तुम से।
फूल यहाँ पर वृक्ष वहाँ पर, तेरी महिमा कहाँ-कहाँ पर।।
चन्दा में मुस्काने वाले, बादल में ओ गाने वाले।

सूरज में प्रकाश तूही है, जल-थल अग्नि प्रकाश तूही है।।
रूप तेरा है कण-कण अन्दर, सारा जग है तेरा मन्दिर।

भीतर बाहर सब जगह, तेरा ही विस्तार।

नाम तेरा ही गूँजता, विश्वरूप करतार ।।1।।

नदियाँ तेरा गीत सुनातीं, पार न पाया कहती जाती।।
घोर घटा जब नभ में आती, गरज-गरज तब नाम सुनाती।
लहरों के सौ हाथ उठा कर, तूही-तूही कहता सागर।।
भौंरा फूल के कानों में, कहता नाम मधुर तानों में।
और ये आंधी और बवंडर, करते फिरते हर-हर-हर- हर।।
उछल-उछल कर जलती ज्वाला, कर में लेकर भक्ति प्याला।
कहती पीले प्रीतम प्यारे, जग है सारा तेरे सहारे।।

जल थल पवन आकाश में परम पुण्य सुखधाम।
गूंज रहा है हर जगह छिन-छिन तेरा नाम।।2।।
सागर उछले बल से तेरे, सूरज चन्दा चाकर तेरे।
नदियों में तूफान उठाता, गिरि गह्वर में ज्वाला जलाता।।
तेरे बल का पार न पाया, सारा जग है तेरी माया।।
धनियों का धन तू ही तो है, बलियों का बल तू ही तो है।।
निर्झर बनकर झरझर करता, दानी बनकर झोली भरता।
शैशव में मुस्काता तू है, यौवन मस्त बनाता तू है।।
फूलों शूलों धूलों में तू, वृक्षों, पत्तों, नदियों में तू।।
जल थल और आकाश में, तेरा है प्रभु वास।
तू ही तो करुणा-निधि, सर्व जगत् की आस।।3।।
तुमको ही करुणा कर कहते, तुझे दया का सागर कहते।

तेरी करुणा अकथ कहानी, दया तेरी से जीये प्राणी।
तेरी दया से दीन दयाला, शीतल होती है अघ-ज्वाला।
सब जगत में तव करुणाई, दया मया माया प्रभुताई।।
माँ की मधुमय ममता तू है, त्राता सारे जग का तू है।
दीन शरण तू दीन दयाला, करुण चरण तव परम कृपाला।।
तव-करुणा का लिए सहारा, पंगु पाते पार किनारा।

अशरण-शरण हे पुण्य चरण, दीनबन्धु भगवान।
करुणा करके राखिए, दास आपना जान ।।4।।

तुम बिन अपना कौन सहारा, तुम बिन भव को कौन किनारा।
मात पिता प्रिय बन्धु तू है, मीत हमारा केवल तू है।।
रात दिना हम तेरे सहारें, रात दिना तू साथ हमारे।
छोड़ तुझे अस जग के नाथा, कहाँ झुकायें अपना माथा।

किसे सुनायें विपदा अपनी, किसे दिखायें पीड़ा अपनी।
तुझ बिन और नहीं जग-नाथा, जिसे सुनायें अपनी गाथा।।
सुनने वाला तू ही तो है, और हमारा जग में को है।

करुणा–निधि करुणा करो, अपना किंकर जान।
माता–पिता सम राखियो, तेरी हैं सन्तान।।5।।

हमको दीजें प्रभु धन-धाना, यश दीजे और सुख नाना।
देना हमको मान सुहाना, निज बल से बलवान बनाना।।
रोग शोक भय निर्धनताई, दूर रहे हमसे कठिनाई।
भरा पूरा ये घर हो सारा, गूंजे इसमें नाम तिहारा।।
याचक दुखिया जो कोई आये, अपने मन को आशा पायें।
सुख की वर्षा नित हो यहाँ पर, न हो दुःख का नाम यहाँ पर।।
रात दिना हम बढ़ते जायें, धन यश कीरत सुख मुस्कायें।।

धनबल यशबल कीर्तिबल, भरे-भरे भण्डार
तेरी करुणा से मिले हमको हे करतार।।6।।

हमको अपनी राह चलाना, करुणामय निज रूप दिखाना।
गूँजे हरदम नाम तिहारा, रिक्त न हो यह कोष हमारा।
गीत तेरे हो मन में अपने, तेरे ही बस देखें सपने।।
राह तेरी से हट न जायें, चाहे कष्ट हजारों आयें।।
जग के धन्धे पूरे कर के, पहुँचें पास तेरे भव तरके।
अन्त समय जब आए हमारा, अधरों पर हो नाम तिहारा।।
जब ये छूटे प्रभु जग माया, तेरे चरण की पायें छाया।

सुखद चरण तेरे प्रभु, मेरा नत ये माथ।
शरण पड़े की लाज को, राखो दीनानाथ।।7।।

ओ३म् तत् सत्